प्राथमिक विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों/अध्यापिकाओं में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध का तुलनात्मक अध्ययन मथुरा जनपद के सन्दर्भ में

डॉ0 मंजू यादव*

सारांश

शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास का ही दूसरा नाम है। इन शक्तियों द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। कुछ विद्वानों के अनुसार शिक्षा देने एवं ज्ञान देने में कोई अन्तर नहीं है; क्योंकि शिक्षा एक प्रक्रिया द्वारा सम्पन्न उपलब्धि है। शिक्षा केवल ज्ञज्ञन देने तक ही सीमित नहीं है। शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कहीं जा सकती।

प्राथमिक विद्यालयों एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों/अध्यापिकाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का विकास करना तथा उनके आत्मसम्बोध का ज्ञान, शिक्षा के आदर्श मूल्यों एवं सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। उपयुर्क्त शोध पत्र में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

मानव अपने पर्यावरण का निर्माता और उसे ठालने वाला दोनों ही हैं, जिससे उसे भैतिक स्थिरता तथा बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक तथा आत्मिक बृद्धि के अवसर प्राप्त होते हैं। मानव ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की तेज गति के साथ अपने पर्यावरण को अनेक प्रकार से बदलने की शक्ति प्रदान कर ली है।

पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है, जो पर्यावरण के माध्यम से, पर्यावरण जागरूकता के विशय में तथा प्राथमिक स्तर से ही छात्र/छात्राओं को जागरूक करने की आवश्यकता पर बल देती है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं में आत्मसम्बोध की भावना जाग्रत करती है। पर्यावरण महान शिक्षक हैं, शिक्षा का कार्य है। छात्र–छात्राओं को उस वातावरण के अनुकूल बनाना जिससे कि वह जीवित रह सके और अपनी मूल प्रवृत्तियों को सन्तुश्ट करने के लिए अधिक से अधिक सम्भव अवसर प्राप्त कर सके। शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण के अनुकूल तथा आत्मसम्बोध (Self Concept) के लिए भी प्रशिक्षित करती है। व्यक्ति को पर्यावरण पर नियन्त्रण रखने की क्षमता प्रदान करती है।

मानव का पर्यावरण–प्राकृतिक तथा मानव निर्मित दोनों सुन्दर शिक्षाप्रद है। जब प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं तितली या चिड़ियों को देखकर उनकी ओर आकृष्ट होता है, तब उनके बारे में अवगत कराना, वातावरण के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना है, पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से छात्रों को शिक्षक अधिगम पर्याप्त मात्रा में प्रदान किया जाता है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं उच्च–प्राथमिक स्तर के बालकों की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध की भावना विकसित करता है। छात्र/छात्राओं की शिक्षण गुणवक्ता में दिन–प्रतिदिन कमी आ रही है, साथ ही छात्रों के भविश्य निर्माण की चिन्ता बनी हुई है।

मानव जीवमण्डल में एक विशिश्ट स्थिति रखता है, वह पर्यावरण में जीता है, उसका उपयोग करता है और उसके अवक्रमण में भी प्रमुख भमिका निभाता है। मनुश्य जो श्वास लेता है, जलग्रहण करता है, भोजन करता है, आवास बनाता है या अन्य आर्थिक एवं सामाजिक क्रियाऐं करता है वे सभी पर्यावरण द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से नियन्त्रित होती है। साथ ही मानव अपनी प्रगति के लिए पर्यावरण का शोशण करता है, उसमें परिवर्तन भी करता है। आज का मानव पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व की अनुभूति कर रहा है।

*एसो0 प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0एड0 विभाग, टी0आर0क0 महाविद्यालय, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

शोध के उद्देश्य

1. मथुरा जनपद के प्राथमिक एवं उच्च विद्यालयों के अध्यापक–अध्यापिकाओं में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म–सम्बोध का अध्ययन करना है।
2. मथुरा जनपद के ग्रामीण/नगरीय छात्र/छात्राओं में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध की भावना विकसित करना है।
3. मथुरा जनपद के ग्रामीण/नगरीय छात्रों में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध का तुलनात्मक अध्ययन करना है।
4. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय की शिक्षण व्यवस्था का अध्ययन करना।
5. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय द्वारा प्रदत्त शिक्षा का विशिश्ट बालकों के भावी जीवन में उपयोगिता का अध्ययन करना।
6. विद्यालय की स्थापना से वर्तमान तक की स्थिति का अध्ययन करना।
7. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के आधारभूत ढ़ाँचे व संरचना का अध्ययन करना।
8. विद्यालय द्वारा पाठय–सहगामी क्रियाओं के संचालन के महत्व का अध्ययन करना।
9. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के छात्रों को समाज में उनका उचित स्थान दिलाने के प्रयासों का अध्ययन करना।
10. पुरूष अध्यापक एवं महिला अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म–सम्बोध का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनायें

1. शासकीय एवं गैर–शासकीय अध्यापकों/अध्यापिकाओंकी पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. पुरूष अध्यापक तथा महिला अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म–सम्बोध के मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध की परिसीमाएँ

प्रस्तुत अध्ययन कर प्रकृति, समय–साधनकी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए, परिसीमायें इस प्रकार हैं।

प्रस्तुत अध्ययन मथुरा जिले तक सीमित रखा गया है। न्यायदर्श के रूप में कुल शासकीय तथा गैरशासकीय प्राथमिक विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 100 अध्यापक/अध्यापिकाओं को सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन विधि एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। समय–सीमा को ध्यान में रखते हुए, शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में मथुरा जनपद के 20 शासकीय तथा 20 गैर–शासकीय प्राथमिक–उच्च–प्राथमिक विद्यालयों के रूप में सम्मिलित किया है।

तालिका–1

अध्यापक	शासकीय अध्यापक	गैर–शासकीय अध्यापक	कुल
	50	50	100

तालिका–2

अध्यापक	पुरूष–अध्यापक	महिला–अध्यार्पिकाओं	कुल
	60	40	100

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन् में आलेखात्मक साहित्य, साक्षात्कार मतावली, प्रश्नावली का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का संकलन

प्रस्तुत अध्ययन में मथुरा जनपद के शासकीय तथा गैर–शासकीय प्राथमिक एवं उच्च–प्राथमिक विद्यालयों में जाकर अध्यापक एवं अध्यापिकाओं से मिलकर अपने शोध के बारें में बताया गया तथा अध्यापकों/अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध से सम्बन्धित प्रश्नवली को भरवाया गया। इस प्रकार 30 दिनों में 20 शासकीय 20 गैर–शासकीय

प्राथमिक एवं उच्च–प्राथमिक विद्यालयों से प्रदत्तों के संकलन की प्रक्रिया को पूर्ण किया गया है।

प्रदत्तो का प्रस्तुतीकरण एवं विश्लेशण

प्रस्तुत शोध में प्रतिशतता बारम्बरता, काई स्कैवयर वर्ग परीक्षण जैसी सॉख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक/अध्यापिकाओं का शैक्षिक स्तर तथा पर्यावरण जागरूकता एवं आत्म–सम्बोध के प्रति रूचि जाग्रत करने हेतु विद्यालय में भैतिक–सुख सुविधाओं द्वारा नये विद्यालय खोलने सम्बन्धी कर्मचारी वर्ग की नियुक्ति संबधी प्रशासनिक वर्ग की नियुक्ति सम्बन्धी, परीक्षा आयोजन एवं परिणाम सम्बन्धी मतावली से प्राप्त प्रदत्तो का प्रस्तुतीकरण है। प्रश्नावली के शिक्षण प्रक्रिया सम्बंधी प्रश्नों के अध्ययन से यह निश्कर्श निकाला गया है कि विद्यालय व 5 से 3 प्रतिशत क्रियांए शिक्षण प्रक्रिया से सम्बन्धित है। 1.5 प्रतिशत नहीं है।

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक/अध्यापिकाओं तथा छात्रों के मध्य सम्बंधों के प्रश्नों के अध्ययन से निश्कर्श निकाला है कि विद्यालय के अध्यापकों/अध्यापिकाओं व छात्रों के मध्य 95 प्रतिशत सम्बंध है जबकि 5 प्रतिशत नहीं है। अनुशासन एवं चरित्र सम्बंधी प्रश्नों से यह निश्कर्श निकाला गया है कि विद्याय मेंअनुशासन एवं चरित्र निर्माण सम्बंधी क्रियाऐं 92.5 प्रतिशत होती हैं। जबकि 7.5 प्रतिशत क्रियाऐं कम होती हैं।

परिणामों की विवेचना

प्रस्तुत शोध की प्रथम परिकल्पना शासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों/अध्यापिकाओं की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध के फलांको में सार्थक अंतर नहीं है। निरस्त हुई– अर्थात शासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध स्तर से अधिक पाया गया, ऐसा होने के निम्नकारण ही सकते हैं–

शासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों/अध्यापिकाओं को वेतन, मंहगाई भत्ते व चिकित्सा भत्ते आदि की सुविधाओं को मिलने से वे भविश्य के प्रति निश्चित रहते हैं तथा नौकरी में स्थापित्व एक सुरक्षित भविश्य की निश्चिता के समान होता है। इसके विपरीत गैर शासकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यायों में कार्यरत अध्यापकों/अध्यापिकाओं को वेतन, भत्ते आदि सुविधाऐं अपेक्षाकृत कम ही मिलती है, अतः गैर–शासकीय विद्यालयों में कार्यरत अध्यापक/अध्यापिकाओं का स्तर अपेक्षाकृत कम प्राप्त हुआ।

प्रस्तुत शोध की द्वितीय परिकल्पना मथुरा जनपद के प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूश एवं महिला अध्यापकों की पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध का फलाकों के मध्यमों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है– स्वतंत्रता के सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत हुई अर्थात पुरूश प्राथमिक/उच्च प्राथमिक अध्यापकों/अध्यापिकाओं पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त अध्ययन से स्पश्ट है कि ग्रामीण एवं नगरीय अध्यापकों/अध्यापिकाओं में पर्यावरण जागरूकता एवं आत्मसम्बोध में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। छात्र व अधिगमकत्ताओं आत्यासंज्ञान के ज्ञान के आधार पर कुछ योग्यताऐं प्राप्त करता है। जैसेः– प्रकरण, जागरूकता, आत्मसम्बोध (मसि ब्वदबमचज) आदि शोधकर्त्ता के निश्कर्श पूर्व में हुए शोध कार्यों समान ही प्राप्त है। कहीं कोई असमान्ता है तो बहुत कम। अथति निश्कर्श पूर्णतः पूर्व शोध–कार्यों से लगभग मेल खाते है।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. माध्यमिक तथा स्नातक विद्यार्थियों पर किया जासकता है।
2. सभी संकायों के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
3. पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम राज्य/संभाग स्तर पर किया जा सकता है।
4. केन्द्रीय विद्यालय के अध्यापक/अध्यापिकाओं पर किया जा सकता है।
5. न्यादर्श बढ़ाकर शोध को वृहत परिणाम वाला बनाया सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

पी0डी0 पाठक, ''शिक्षा मनोविज्ञान'' (2013)

ग्रैरेट एच0 ई0, आर0 एस0 वुडवोर्थ (2004) ''स्टेटिक्स इन साईक्लोजी एण्ड एजूकेशन, न्यू देहली, प्रोगोन इन्टरनेशनल पब्लिर्श्स।

यादव मन्जू (2004), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याऐं।

राय, पारसनाथ (1999), अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

शर्मा आर0ए0 (2012), शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।